No. of Printed Pages : 7

MTT-003

POST GRADUATE CERTIFICATE IN BANGLA-HINDI TRANSLATION PROGRAMME (PGCBHT)

Term-End Examination

June, 2022

MTT–003 : बांग्ला-हिन्दी के विभिन्न भाषिक क्षेत्रों में अनुवाद

Time : 3 Hours *Maximum Marks : 100*

नोट : *सभी प्रश्नों के उत्तर दने हैं।*

1. बांग्ला से हिन्दी में अनुवाद करते समय किस पकार मातृभाषा का प्रभाव पड़ने की सम्भावना रहती है ? इससे बचने के क्या उपाय हैं ? 20

अथवा

नाटकों का अनुवाद करते समय किस प्रकार की सावधानी बरतनी पड़ती है ? यह कथा साहित्य के अनुवाद से किस प्रकार अलग होता है ? समझाइये।

2. निम्नलिखित बांग्ला शब्दों में से किन्हीं **पाँच** के हिन्दी पर्याय लिखिए : 5

(क)

(ख)

(ग)

(घ)

(ङ)

(च)

(छ)

(ज)

(झ)

(ञ)

3. निम्नलिखित हिन्दी शब्दों में से किन्हीं **पाँच** के बांग्ला पर्याय लिखिए : 5

(क) पेड़

(ख) खेलकूद

(ग) पैदल

(घ) दरवाजा

(ङ) आँख

(च) छाँव

(छ) मजदूरी

(ज) पतझड़

(झ) गुस्सा

(ञ) बीमार

4. निम्नलिखित शब्दों में से किन्हीं **पाँच** के बांग्ला में अर्थ बताइए और उनका हिन्दी और बांग्ला वाक्यों में अलग-अलग प्रयोग कीजिए : 20

(क) चूड़ी

(ख) दादी

(ग) विविधता

(घ) खाना

(ङ) घर

(च) मिट्टी

(छ) गोपनीय

(ज) अकेलापन

(झ) अपवाद

(ञ) इमली

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **चार** के हिन्दी में अनुवाद कीजिए : प्रत्यक 10

(क) ??

(ख) ??

(ग) ??

(घ) ??

(ङ) ??

6. निम्नलिखित में से किसी **एक** का बांग्ला में अनुवाद कीजिए : 10

(क) जनवरी का प्रथम सप्ताह था। उस दिन जब वह गंगा स्नान करके लौटे, उन्हें कुछ ज्वर-सा मालूम हुआ। उनकी पत्नी जसोदा देवी अपनी परम्परा के अनुसार लखनऊ में अपने छोटे पुत्र के यहाँ थीं, उनके नौकर बुधई के ऊपर उनकी देखभाल करने का पूरा भार था। दोपहर के समय जब उन्हें पसलियों में दर्द भी महसूस हुआ, उन्होंने वैद्यराज धन्वन्तरि शास्त्री को बुलाया। वैद्यराज न नब्ज देखकर काढ़ा पिलाया—पता चला कि सर्दी लग गई है, ठीक हो जाएगी। दूसरे दिन जब बुखार और तेज हुआ, तब उन्होंने डॉक्टर को बुलाया। डॉक्टर ने देखा कि उन्हें निमोनिया हो गया है। दोनों फेफड़े जकड़ गए हैं। उसने दवा दी। बीमारी के चौथे दिन आचार्य चूड़ामणि ने बुधई को भेजकर मुझे बुलाया था।

थोड़ी देर तक मैं उनकी चारपाई के सामने खड़ा रहा कि वे आँखें खोलें, फिर हारकर मुझे ही बोलना पड़ा, "गुरुदेव ! आपका शिष्य जनार्दन जोशी आपकी सेवा में उपस्थित है।"

मेरा इतना कहना था कि आचार्य चूड़ामणि ने अपनी आँखें खोल दीं, 'जनार्दन ! मेरा अंत समय आ गया है। तुम मेरे सबसे अधिक निकटस्थ रहे हो, तो तुम्हें बुला भेजा !'

मैंने आचार्य चूड़ामणि की बीमारी के सम्बन्ध में लालमणि से सब कुछ नीचे ही सुन लिया था, जो देवरिया से एक घंटा पहले ही आ गया था—आचार्य चूड़ामणि का तार पाकर। मेरी आँखों में भी आँसू आ गए। मैंने कहा, 'गुरुदेव ! यह संसार असार है और यह शरीर नश्वर है !'

(ख) उसने अपने बारे में ज्यादा कुछ नहीं बताया था। और मैंने भी उसे कुरेदा नहीं था। हालाँकि मैं पूरी तरह खुल गया था। मेरे भीतर की सभी तहें खुल चुकी थीं। यह मेरी कमजोरी है और मैं इससे वाकिफ भी हूँ। लेकिन इसे दूर करने की मैंने कभी कोई कोशिश नहीं की।

मैंने उसकी ओर गदन उठाकर देखा। उसकी आँखें नशे में बोझिल हैं। मैं उसी चट्टान पर अधलेटा हो

गया। शाम पहाडों पर उतर चुकी है और आसपास के सभी झोंपड़ों में चूल्हा सुलग गया था। माहौल में महुए की कच्ची शराब की गंध फैलने लगी है। दूर-दूर तक नंगे ऊँचे पहाड़ और इन्हीं पहाड़ों पर बेतरतीब खेत और प्रत्येक पहाड़ी खेत पर एक-एक झोंपड़ा। शाम अपनी सामर्थ्य से अधिक अँधेरा उठा लाई थी। और पहली ठोकर खाते ही पहाड़ों पर अँधेरा बिखर गया है। पहाड़ के सीने से निकले पेड़ों पर से अँधेरा धीरे-धीरे रिस रहा है। सागौन के पेड़ों के पत्ते धूल से अटे हैं और उनका हरापन अब नजर नहीं आता है, कितनी अजीब बात है। इस क्षेत्र के हिस्से में धूल-ही-धूल है। सड़कें पक्की नहीं हो पाईं, रास्तों पर भी धूल है। इन आदिवासियों के जिस्म पर भी धूल है। झोंपड़ों पर भी धूल है। भाग्य भी धूल से भरा है। व्यवस्था के कमीनेपन को भाग्य के खाते में डालने की अपनी चालाकी पर मैं सहसा आश्चर्य करने लगा। बरसों से चल रहे राहत कार्य भी इस धूल को नहीं हटा पा रहे हैं, उल्टे इनकी आँखों में धूल झोंकी जा रही है।

मैंने गर्दन उठाकर देखा, झोंपड़े में इकलौते दरवाजे के ऊपर एक नीबू रस्सी से बाँधकर लटकाया है।

शुभ के स्वागत के लिए, अशुभ और दुर्भाग्य से सुरक्षा के लिए। नींबू सूखकर काला पड़ चुका है। मैंने सोचा, दरअसल रस्सी से नीबू नहीं, एक सुरक्षाबोध लटकाया है। अपने अदृश्य शत्रु के खिलाफ इनके पास सिर्फ नीबू है। काला कमजोर नीबू। लेकिन आपदाएँ अदृश्य दरवाजे से दाखिल होकर उनके जीवन का एक हिस्सा हो चुकी हैं। ये कहाँ गुहार लगाएँ ? सभ्य संसार की व्यवस्था में इनके लिए जगह नहीं है। उस व्यवस्था में इन्हें विपत्ति समझकर लोग परे हो जाते हैं।